हवा—पेड़

ज्योत्सना मिलन

चित्रांकनः सुजाशा दास गुप्ता

यह किताब

....

की है।

dFkk d fo"k; e

कथा एक लाभ निरपेक्ष संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में हुई। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में कथा का अनूठा योगदान है। कथा झुग्गी-झोपड़ी, बस्तियों और सरकारी स्कूलों में काम करती है ताकि हर बच्चा मज़े के लिए और अच्छी तरह पढ़ सके। महिलाओं और अध्यापिकाओं के द्वारा कथा बच्चों में उनकी प्रतिभा को उजागर करने में मदद करती है।

हमारी किताबें, वर्कशॉप और शिक्षण केन्द्र, कहानी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ती हैं। कथा का अनुवाद के क्षेत्र में किया हुआ काम भारतीय प्रकाषन के इतिहास में अनूठा माना जाता है। इसे *इकोनॉमिक टाइम्स* ने इन शब्दों में सराहा है, "A unique and special moment in Indian publishing history ..."

कथा की पुस्तकों को विश्व स्तर पर ख्याति मिली है। अंतर्राष्ट्रीय ज्युरी द्वारा प्रतिष्ठित एस्ट्रिड लिंडग्रिन पुरस्कार के लिए भी कथा का नामाँकन किया गया है। बाल साहित्य के क्षेत्र में यह पुरस्कार विश्व में सबसे बड़ा माना जाता है।

कथा नवीन एवं अनुभवी लेखकों, अनुवादकों और चित्रकारों के साथ काम करती है।

क्या आपको बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना, अनुवाद करना अच्छा लगता है? तो अपनी प्रतिलिपि इस ईमेल आई डी पर भेजें: editors@katha.org, और बनें कथा परिवार का हिस्सा।

"[Katha] ... an educational jewel in India's crown."
— **Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, International Monetary Fund**

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities." — **Charles Landry, The Art of City Making**

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it … create[s] such gorgeous picture books for children."
— **Time Out**

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books]." — **Papertigers**

Copyright © KATHA

हवा–पेड़

ज्योत्सना मिलन

चित्रांकन: सुजाशा दास गुप्ता

KATHA

Copyright © KATHA

आँख उठाकर देखा
सामने हवा थी
और मुझको पेड़ दिखा रही थी
कि देखो!
यह पेड़ हैं
ऐसे
होता है पेड़!

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

खिल–खिल ...
अचानक
हरी हँसी से भीग गया
कमरा
उचक कर झाँका
हवा
पेड़ को गुदगुदा रही थी
और पेड़
खिलखिला रहा था!

Copyright © KATHA

ठिठक गई मैं
पेड़ के पास
हवा
डाल पकड़कर
झूल रही थी
हवा में।

Copyright © KATHA

पेड़ को
बोलना सिखा रही थी हवा
बोलो ''आ''
बोलो ''का''
बोलो ''श'' ...
पेड़ दोहरा रहा था
बात हवा की थी
पेड़ कह रहा था।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

लगातार दौड़ने के बाद
पेड़ से टिककर
सुस्ता रही थी
हवा
और पेड़ टकटकी बांधे
देख रहा था।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

T;kRluk feyu ने 12 साल की उम्र से लिखने की शुरूआत कर दी थी। उनके द्वारा लिखी हुई चार छोटी कहानियों का संग्रह, दो उपन्यास, दो कविताओं का संग्रह और गुजराती भाषा में लिखे हुए काम प्रकाशित हैं। वह सैल्फ एंप्लॉयड वूमेंस एसोसिएशन (SEWA) द्वारा प्रकाशित औरतों की पत्रिका *'अनुसुया'* की संपादक भी रह चुकी हैं। उन्हें सन् 1956–1957 में मुक्तिबोध फैलोशिप और सन् 1996–1997 में सीनियर फैलोशिप, उपन्यास लिखने के लिए मिली थी।

कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से स्नातक, lqtk'kk nkl xIrk एक फ्रीलांस इलस्ट्रेटर के रूप में 16 वर्षों से काम कर रहीं हैं। इन्होंने कई प्रमुख पब्लिशिंग हाउस और पत्रिकाओं के साथ काम किया है जिनमें से *कथा, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेशनल बुक ट्रस्ट, रत्ना सागर, स्कॉलैस्टिक इंडिया* और लोकप्रिय बच्चों की पत्रिका *चिल्ड्रनस वर्ल्ड* प्रमुख हैं।

Copyright © KATHA

Copyright © KATHA

कवि की यह एक ऐसी रोमांचक कविता है जिसमें हवा और पेड़ के बीच बातें हो रहीं हैं। प्रकृति से जुड़ि हुई यह कहानी बहुत ही अद्‌भुत और दिलचस्प है।

Copyright © KATHA